IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

सामाजिक नवाचार : ग्रामीण उद्यमिता की एक कुंजी के रूप में

अंकिता जांगिड़,
स्वतन्त्र शोधार्थी

सारांश-

इस शोधपत्र में शोधार्थी ने सामाजिक नवाचार के जुड़ाव के साथ ग्रामीण उद्यमिता की संकल्पना को कुछ विद्वानों के नवीन कार्यों के माध्यम से समझाने का प्रयास किया है कि किस प्रकार ग्रामीण उद्यमिता विभिन्न कारकों से प्रभावित होती हुई समय के साथ ग्रामीण क्षेत्रों का मार्ग विकास की ओर उन्मुख करती है। सामाजिक नवाचार, ग्रामीण उद्यमिता और विकास के बीच सम्बन्ध स्थापित करते हुए स्कॉटलैंड, पुर्तगाल, आयरलैंड तथा नार्डिक देशों का अध्ययन किया गया। ग्रामीण क्षेत्रों में नवाचारों के बारे में बात करते हुए इससे सम्बन्धित नवीन अवधारणाओं पर भी चर्चा की गई है। शोधार्थी ने कुछ चुनिंदा शोधकार्यों को आधार बनाते हुए ग्रामीण उद्यमिता को ग्रामीण विकास की कुंजी के रूप में प्रस्तुत करते हुए इससे होने वाले लाभों का भी जिक्र किया है। यह अध्ययन किसी भी प्रशासनिक स्तर पर ग्रामीण उद्यमिता के महत्व को बताने में सक्षम होगा।

कुंजी शब्द- ग्रामीण उद्यमिता, ग्रामीण विकास, सामाजिक नवाचार, ग्रामीण नवाचार, ग्रामीण रोजगार, ग्रामीण उद्यमी, उद्यमशीलता ।

परिचय-

उद्यमशीलता दुनिया भर में आर्थिक विकास और विकास के लिए एक शक्तिशाली उत्प्रेरक के रूप में उभरी है। जबकि यह अक्सर भीड़ भरे शहरी केंद्रों और प्रौद्योगिकी केंद्रों से जुड़ा होता है, ग्रामीण क्षेत्रों पर इसके संभावित प्रभाव को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। ग्रामीण विकास ग्रामीण समुदायों में आजीविका, बुनियादी ढांचे और समग्र कल्याण में सुधार की विशेषता है और सतत विकास लक्ष्यों का एक महत्वपूर्ण घटक है। उद्यमिता जब प्रभावी रूप से उपयोग की जाती है, तो रोजगार के अवसर पैदा करके, आय पैदा करके और स्थानीय समुदायों को सशक्त बनाकर ग्रामीण विकास को बढ़ावा देने में एक परिवर्तनकारी भूमिका निभा सकती है।

ग्रामीण क्षेत्रों को अनूठी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है- जैसे संसाधनों तक सीमित पहुंच, अपर्याप्त बुनियादी ढांचा और भौगोलिक अलगाव, जो अक्सर उनकी आर्थिक प्रगति में बाधा बनते हैं। पारंपरिक उद्योग, जो कभी ग्रामीण अर्थव्यवस्थाओं की रीढ़ थे, ने हाल के वर्षों में गिरावट या ठहराव का अनुभव किया है। इस संदर्भ में, ग्रामीण विकास के लिए एक व्यवहार्य विकल्प के रूप में उद्यमशीलता का उदय ग्रामीण अर्थव्यवस्थाओं को पुनर्जीवित करने और ग्रामीण आबादी के लिए जीवन की गुणवत्ता बढ़ाने की आशा प्रदान करता है।

उद्देश्य-

इस शोध पत्र का प्राथमिक उद्देश्य उन शोधों/साहित्यों का अध्ययन करना है जो ये पता लगाते हैं कि सामाजिक नवाचारों से उत्पन्न उद्यमिता और ग्रामीण विकास के बीच सम्बन्ध कैसे हैं, जो उन तंत्रों पर प्रकाश डालते हैं जिनके माध्यम से उद्यमिता आर्थिक विकास को गति दे सकती है और ग्रामीण समुदायों को सशक्त बना सकती है और प्रमुख कारकों, चुनौतियों और ग्रामीण उद्यमिता के प्रभावों की जांच करते हैं। इस अध्ययन का उद्देश्य ग्रामीण विकास में उद्यमिता की भूमिका की व्यापक समझ प्रदान करना है।

विधि-

साहित्य समीक्षा की यह गुणात्मक अंतर्दृष्टि वास्तविक दुनिया के दृष्टिकोण और अनुभव प्रदान करती हैं, जो ग्रामीण उद्यमिता से जुड़ी चुनौतियों और अवसरों की गहरी समझ प्रदान करती हैं।

महत्व-

यह शोधपत्र उद्यमिता और ग्रामीण विकास के प्रतिच्छेदन की जांच के कार्यों का अध्ययन करके ज्ञान के मौजूदा निकाय में योगदान देता है। यह ग्रामीण आर्थिक विकास, सामाजिक सशक्तिकरण और सतत विकास के चालक के रूप में उद्यमिता की क्षमता के बारे में नीति निर्माताओं, शोधकर्ताओं और प्रशासन को सूचित करना चाहता है। सफल वैयक्तिक अध्ययन, चुनौतियों और नीतिगत सिफारिशों की गहन खोज के माध्यम से, इस अध्ययन का उद्देश्य दुनियाभर में ग्रामीण समुदायों के लाभ के लिए ग्रामीण उद्यमिता की अप्रयुक्त क्षमता को कैसे उजागर किया जाए, इस पर कार्रवाई को प्रेरित करना और संवाद को प्रोत्साहित करना है।

विश्लेषण-

स्टीनर, कैलो और शकस्मिथ (2023) के अनुसार ग्रामीण संदर्भ में सामाजिक नवाचार के बारे में अनुसंधान, नीति और अभ्यास की प्रमुखता की बहुत कम जानकारी है। इस ज्ञान अंतर को दूर करने के लिए इनका शोधपत्र यह पता लगाता है कि ग्रामीणता सामाजिक नवाचार प्रक्रिया को कैसे प्रभावित कर सकती है? उनका शोधपत्र स्कॉटलैंड में एक ग्रामीण सामाजिक उद्यम पहल के लाभार्थियों, सेवा प्रदाताओं और बाहरी हितधारकों के साथ किए गए 68 साक्षात्कारों पर चित्रण पर आधारित है। यह एक यथार्थवादी मूल्यांकन सिद्धांत (पॉसन और टायली, 1997) दृष्टिकोण को कैलो और अन्य (2019) के ग्रामीण सामाजिक नवाचार के लिए संदर्भ-तंत्र-परिणाम विन्यास की पहचान करने के लिए सामाजिक नवाचार विश्लेषणात्मक ढांचे के साथ संयुक्त रूप से अपनाता है। निष्कर्ष इस बात पर प्रकाश डालते हैं कि ग्रामीण स्थानों की विशिष्ट विशेषताएं सामाजिक नवाचार के प्रोत्साहन के रूप में कार्य कर सकती हैं। एक सामाजिक नवाचार के सकारात्मक परिणाम संभावित रूप से ग्रामीण विशिष्टता और इसके समस्याग्रस्त संदर्भ में निहित हो सकते हैं। आवश्यकता से पैदा हुए अपकर्षक कारक प्रतिक्रियाशील सामाजिक नवाचार की ओर तथा पर्यावरण में कथित अवसरों के दोहन के माध्यम से प्राप्त कारकों को सक्रिय सामाजिक नवाचार की ओर ले जाते हैं। महत्वपूर्ण रूप से, अपकर्षक कारक सामाजिक नवाचार की स्थापना को कमजोर नहीं करते, वास्तव में वे सामाजिक नवाचार को बढ़ावा दे सकते हैं और इसकी वैधता को मजबूत कर सकते हैं। यह शोधपत्र यह भी दर्शाता है कि सामाजिक नवाचार प्रक्रिया के परिणाम ग्रामीण क्षेत्रों के लिए विशिष्ट नहीं हो सकते हैं। इसके बजाय, वांछित परिणामों का मार्ग ग्रामीण कारकों द्वारा वातानुकूलित होता है, जो ग्रामीण सामाजिक नवाचार के संदर्भों और तंत्र को आकार देता है। चूंकि अलग-अलग ग्रामीण स्थानों में स्थानीय चुनौतियों का समाधान करने के लिए अलग-अलग संसाधन हो सकते हैं। सामाजिक नवाचार प्रक्रिया एक मामले से दूसरे मामले में भिन्न होती है, हालांकि जिन चुनौतियों का समाधान किया जा रहा है, वे समान हो सकती हैं। इस प्रकार, ग्रामीण सामाजिक नवाचार नीतियां 'अति निर्धारित' नहीं होनी चाहिए। प्रसंग चुनौतियाँ और समाधान दोनों बनाता है और वांछनीय सामाजिक नवाचार परिणाम प्राप्त करने के लिए उपयोग किए जाने वाले तंत्र के प्रकार और रूप को प्रभावित करता है।

बस्टर (2023) के अनुसार प्रदेशों में सामाजिक और स्थानिक असमानताओं को दूर करने के लिए सामाजिक नवाचार की क्षमता तेजी से पहचानी जा रही है। इस पृष्ठभूमि के विपरीत, इस शोधपत्र के परिणाम प्रादेशिक विकास के लिए सामाजिक रूप से नवीन दृष्टिकोणों में लगे परिधीय ग्रामीण क्षेत्रों में कारकों के गुणात्मक अध्ययन पर आधारित हैं। बस्तर ने उदाहरण देते हुए बताया कि पुर्तगाल में नए युवा किसानों का एक नेटवर्क सामाजिक टोपोलॉजी पद्धति का उपयोग करके यह प्रदर्शित करने के लिए जांच कर रहा है कि ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक नवाचार कैसे फैलता है? आंकड़ों को स्थानिक पैमानों पर एकत्र और विश्लेषण किया गया ताकि यह जांचा जा सके कि छवियां बुनियादी ढांचे की पारिस्थितिकी को कैसे प्रसारित करती हैं। इन अवलोकनों की अवधारणा के लिए शोधपत्र इस धारणा पर आधारित है कि सामाजिक नवाचार में दोहरे स्थानिक गुण हैं। पहला, एक अनुभवजन्य रूप से सुपाठ्य और सीमा में बंधी वस्तु/विचारधारा प्रदेश में फैलती है। दूसरा, एक पार-दिशाहीन सम्बन्ध प्रक्रिया जिसमें वस्तु, विषय और स्थान को पारस्परिक रूप से फिर से विन्यासित किया जाता है (प्रक्रिया-सम्बन्ध)। इस धारणा का सामाजिक नवाचार में प्रसार की गतिशीलता को समझने पर प्रभाव पड़ता है, विशेष रूप से प्रक्रिया-संबंधपरक तरीके से सामाजिक नवाचार कैसे फैलता है? बस्टर के अनुसार इस पृष्ठभूमि के विपरीत, लेख का प्राथमिक उद्देश्य प्रक्रिया-संबंधपरक तरीके से सामाजिक नवाचार की प्रसार गतिशीलता की जांच करना और विस्तृत अध्ययन करना है।

ओलमेडो, वुइज़वेर और औ'शौघ्नेस्सी (2023) ने ग्रामीण उद्यमिता पर एक अध्ययन किया और बताया कि ग्रामीण सामाजिक उद्यमों को उन संगठनों के रूप में तेजी से पहचाना जाता है जो सामुदायिक जरूरतों को पूरा करने के लिए सामान और/या सेवाएं प्रदान करके और समावेशी सामाजिक और शासन संबंधों को बढ़ावा देकर स्थानीय विकास में योगदान करते हैं। उनका उद्देश्य यह जानना था कि कैसे ग्रामीण सामाजिक उद्यम अपने इलाकों के विकास में योगदान करते समय अपने 'स्थान' के विभिन्न आयामों के साथ सामाजिक-आर्थिक संबंधों की बहुलता में संलग्न होते हैं। ग्रामीण आयरलैंड में संचालित सामाजिक उद्यमों के तीन गहन मामलों के अध्ययन के आधार पर, उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि कैसे ग्रामीण सामाजिक उद्यम अपने 'स्थान' के स्थानीय, संस्थागत, सामग्री और पहचान के पहलुओं से जुड़ते हैं, जो उनके 'प्लेसियल एम्बेडेडनेस' (जगह में मजबूती से और गहराई से जड़े या स्थिर होने का गुण) को इंगित करता है। साथ ही वे ये भी प्रदर्शित करते हैं कि ये संगठन कैसे बाजार, पुनर्वितरण और पारस्परिक संबंधों को जोड़ते हैं, जो उनकी 'मूल संकरता' को इंगित करता है। इन निष्कर्षों की परस्पर संबंधित प्रकृति के आधार पर वे तर्क देते हैं कि यह स्थानीयता ठोस संकरता की प्रक्रिया के माध्यम से है, चूंकि ग्रामीण सामाजिक उद्यम अपने इलाकों के एकीकृत विकास में योगदान देने के लिए सामाजिक नवाचार को बढ़ावा देते हैं। वे अतिरिक्त-स्थानीय स्रोतों से अन्य संसाधनों के साथ पूरक करते हुए स्थानीय संसाधनों का दोहन और (पुनः) मूल्यवर्धन (अप्रयुक्त) करते हैं और नव-अंतर्जात ग्रामीण विकास के अनुरूप अपनी स्थानीय आबादी की जरूरतों के आधार पर संरचनात्मक-बहिर्जात बलों को समायोजित और/या प्रतिक्रिया करते हैं।

जंगस्बेर्ग और अन्य (2020) ने अपने अध्ययन में बताया कि नॉर्डिक देशों के ग्रामीण क्षेत्रों में अक्सर जनसांख्यिकीय परिवर्तन और सार्वजनिक सेवाओं को बंद करने जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। इस स्थिति को दूर करने के लिए कुछ ग्रामीण समुदायों ने समाधान विकसित किए हैं, जिन्हें सामाजिक नवाचार के रूप में चित्रित किया जा सकता है। यह शोधपत्र नॉर्डिक देशों में 18 ऐसे समुदाय-संचालित सामाजिक नवाचार परियोजनाओं का विश्लेषण करता है और ऐसी परियोजनाओं की शुरूआत और कार्यान्वयन चरणों में विभिन्न पहलकर्ताओं के महत्व की जांच करता है। गुणात्मक विश्लेषण के आधार पर समुदाय संचालित सामाजिक नवाचार के विभिन्न चरणों पर ध्यान केंद्रित करते हुए, यह शोधपत्र प्रत्येक परियोजना को विकसित करने में विभिन्न पहलकर्ताओं के महत्व का आंकलन करता है। यह विश्लेषण समुदाय के सदस्यों, नागरिक समाज संगठनों, स्थानीय सार्वजनिक क्षेत्र, निजी क्षेत्र और क्षेत्रीय एवं राष्ट्रीय प्राधिकरणों के सापेक्ष महत्व को इन परियोजनाओं की शुरूआत और कार्यान्वयन प्रक्रियाओं में उनकी संबंधित भागीदारी के संदर्भ में प्रदर्शित करता है। इस शोधपत्र के प्रमुख निष्कर्ष इन समुदाय संचालित सामाजिक नवाचार परियोजनाओं में से प्रत्येक के लिए पहल और कार्यान्वयन के बीच अंतर पर जोर देते हैं। पहल चरण समुदाय के सदस्यों, नागरिक समाज संगठनों और स्थानीय सार्वजनिक क्षेत्र पर अत्यधिक निर्भर है, जबकि यह मुख्य रूप से नागरिक समाज संगठन हैं जो कार्यान्वयन चरण पर हावी है। इस शोधपत्र का उद्देश्य समुदाय संचालित परियोजनाओं

को शुरू करने और बनाए रखने के लिए स्थानीय पहलकर्ताओं के विचारों को विकसित करने, संसाधनों को खोजने और निर्णय लेने का प्रबंधन करने की क्षमता पर केंद्रित है।

स्टीनर और टीसडेल (2019) अपने शोधपत्र में बताते हैं कि सामाजिक उद्यम स्थायी आर्थिक विकास प्रदान करने, सार्वजनिक सेवाओं की वापसी को संबोधित करने और सामुदायिक सामंजस्य को बढ़ावा देने की ग्रामीण चुनौतियों से निपटने के साधन का प्रतिनिधित्व कर सकता है। उनका शोधपत्र मौजूदा अकादमिक और साथ ही नीति साहित्य की समीक्षा पर आधारित है और एक वैचारिक ढांचा विकसित करता है जो यह समझने में मदद करता है कि ग्रामीण विकास के लिए सामाजिक उद्यमों के संभावित योगदान को कैसे बढ़ाया जाए। वे स्कॉटलैंड के दो ग्रामीण क्षेत्रों का खोजपूर्ण अध्ययन करते हैं तथा वैचारिक ढांचे और इसके ग्रामीण (भौगोलिक), नीति और सामाजिक उद्यम कार्यक्षत्र को भरने के लिए सामाजिक उद्यम हितधारकों से साक्षात्कार से प्राप्त आंकड़ों का उपयोग करते हैं। उनके इस अध्ययन से पता चलता है कि स्थानीय स्तर पर स्थानीय मुद्दों को संबोधित करने के लिए सामाजिक उद्यम संभावित रूप से एक एकीकृत दृष्टिकोण को सक्षम कर सकते हैं। वे स्थानीय रूप से उत्तरदायी सेवाएं बना सकते हैं जो ग्रामीण संदर्भ में उपयुक्त हों। हालाँकि, ग्रामीण सामाजिक उद्यम की क्षमता को बढ़ाने के लिए पारंपरिक नीति दृष्टिकोण से आगे बढ़ने की आवश्यकता हो सकती है जो आर्थिक विकास, सामुदायिक सामंजस्य और सार्वजनिक सेवाओं को अलग और अलग मानते हैं क्योंकि राष्ट्रीय नीति-निर्माण ढांचे हमेशा ग्रामीण स्तर पर व्यवहार में लागू नहीं होते हैं। इसके अतिरिक्त, सामाजिक उद्यम के नीतिगत व्यवहार को 'बढ़ाने' के प्रयासों से आगे बढ़ने और एक निश्चित पैमाने पर अर्थव्यवस्थाओं को प्राप्त करने की आवश्यकता है। यह सामाजिक उद्यमों के समूहों के बीच सहयोग तथा सामाजिक उद्यमों और प्राधिकरण के बीच सम्भावित अर्थव्यवस्थाओं को जन्म दे सकता है, विशेष रूप से जहां समुदायों के भीतर मजबूत विश्वास-आधारित संबंध, स्वयं-सहायता और सेवाओं के सह-उत्पादन की इच्छाशक्ति हैं। उचित मार्गदर्शन और समर्थन के साथ अनेक ग्रामीण चुनौतियों और जरूरतों को सामाजिक उद्यम द्वारा विकास के अवसरों में बदला जा सकता है। ग्रामीण सामाजिक उद्यमों द्वारा सामना किए जाने वाले अवसरों और चुनौतियों पर प्रकाश डालते हुए उनका शोधपत्र संभावित शोध अंतरालों का सुझाव देता है, यदि ये भरे जाते हैं, तो उनकी पूर्ण क्षमता को पहचानने और बढ़ावा देने में योगदान दे सकते हैं।

नेउमेर (2017) ने एक अध्ययन किया और बताया कि राजनीतिक और लोक संवादों में सामाजिक नवाचार को हाल ही में मितव्ययिता की राजनीति के कारण उत्पन्न अंतराल को भरने के लिए एक आशाजनक समाधान के रूप में देखा गया है या इक्कीसवीं सदी की तथाकथित बड़ी चुनौतियों को पूरा करने के साधन के रूप में देखा गया है। यह शोधपत्र सामाजिक नवाचार की सफलता का समर्थन करने वाले कारकों पर केंद्रित है अर्थात् कारक जो एक सामाजिक नवाचार के विकास का समर्थन करते हैं, जो आत्मसात करने की उच्च दर की संभावना को बढ़ाता है। इसे प्राप्त करने के लिए संबोधित प्रश्न हैं- कौन से कारक सामाजिक नवाचार को आगे लाते हैं? नवाचार प्रक्रिया में वे कहाँ प्रभावी होते हैं? ग्रामीण विकास नीति किस सीमा तक इन कारकों पर उद्देश्यपूर्ण प्रभाव डाल सकती है? नवोन्मेष और सामाजिक नवोन्मेष अनुसंधान के निष्कर्षों के साथ-साथ ग्रामीण सहभागी नियोजन के आरेख से यह पता चलता है कि तीन स्तरों के कारक सामाजिक नवोन्मेष की सफलता को प्रभावित करते हैं। ये हैं- (1) समग्र नवाचार प्रक्रिया की सफलता के लिए महत्वपूर्ण कारक, (2) सामाजिक नवाचार के कारकों के नेटवर्क के पर्यावरण को कुशलता से प्रभावित करने वाले कारक और (3) वास्तविक भागीदारी प्रक्रिया को प्रभावित करने वाले कारक। इन कारकों में से प्रत्येक को करीब से देखने से पता चलता है कि उनमें से अधिकांश को बाहरी संचालन से बाहर रखा गया है और पर्यावरण को कुशलता से प्रभावित करने वाले कारक सामाजिक नवाचार का समर्थन करने के लिए ग्रामीण नीति के लिए संभावित जुड़ाव प्रदान करते हैं। यह शोधपत्र यह निष्कर्ष निकालने की अनुमति देता है कि ग्रामीण विकास में सामाजिक नवाचार को आसानी से शुरू नहीं किया जा सकता है। साथ ही यह सवाल उठाता है कि क्या सामाजिक नवाचार को राजनीतिक रूप से उपकरण बनाया जा सकता है?

कोसगार्ड, म्युलर और तन्विग (2015) ने एक अध्ययन किया और उनका प्रस्तुत शोधपत्र जांच करता है कि ग्रामीण उद्यमिता जगह(Place) और खाली स्थान(Space) के साथ कैसे जुड़ती है। यह ग्रामीण उद्यमिता में सामाजिक-स्थानिक अवधारणा के रूप में "ग्रामीण" की अवधारणा की पड़ताल करता है और ग्रामीण उद्यमिता के आदर्श प्रकारों के बीच अंतर करने के महत्व को दर्शाता है। यह शोधपत्र ग्रामीण क्षेत्रों में दो आदर्श प्रकार की उद्यमशीलता विकसित करने के लिए मानव भूगोल से अवधारणाओं का उपयोग करता है। आदर्श प्रकार अनुसंधान के लिए शक्तिशाली अनुमान का गठन करते हैं और यहां ग्रामीण उद्यमिता और ग्रामीण विकास पर मौजूदा साहित्य को जोड़ने और समीक्षा करने के साथ-साथ नए शोध के अवसर और प्रश्न विकसित करने के लिए उपयोग में लिए जाते हैं। ये दो आदर्श प्रकार हैं- (i) ग्रामीण में उद्यमिता और (ii) ग्रामीण उद्यमिता। पहला उद्यमशीलता की उन गतिविधियों का प्रतिनिधित्व करता है जिनमें सीमित अंतर्निहितता होती है और स्थान(Space) के लाभ-उन्मुख और गतिशील तर्क को लागू करती है। दूसरा उद्यमशीलता की उन गतिविधियों का प्रतिनिधित्व करता है जो जगह(Place) और खाली स्थान(Space) को फिर से जोड़ने के लिए स्थानीय संसाधनों का लाभ उठाता है। जबकि दोनों प्रकार स्थानीय विकास में योगदान करते हैं। दूसरे वाले प्रकार में ग्रामीण क्षेत्र में संसाधनों के अनुकूलतम उपयोग की क्षमता होती है और इन उद्यमों को स्थानांतरित करने की संभावना नहीं है, भले ही आर्थिक तर्कसंगतता इसका सुझाव दे। लेखकगण के अनुसार वैचारिक भेद ग्रामीण क्षेत्रों में उद्यमशीलता की गतिविधियों की विविधता के साथ अधिक गहराई से जुड़ने हेतु स्वीकार्य होते हैं। यह उद्यमशीलता की प्रक्रियाओं और स्थानीय आर्थिक विकास पर उनके प्रभाव के बारे में हमारी समझ को बढ़ाता है। यह अध्ययन उद्यमशीलता की स्थानीय प्रक्रियाओं की समझ में योगदान देता है और बताता है कि ये प्रक्रियाएँ कैसे तत्काल संदर्भ या "स्थान (जगह/ Place)" से सक्षम और बाधित होती हैं। उद्यमशीलता के लिए संदर्भ के महत्व को दिखाने के लिए शोधपत्र खाली स्थान(Space) और जगह (Place) को बुनता है, जो उद्यमिता अनुसंधान और सिद्धांतों को प्रासंगिक बनाने के लिए नवीन प्रश्नों का जवाब देता है। इसके अलावा, आदर्श प्रकार का अध्ययन आगे के शोध के लिए उपयोगी हो सकते हैं और ग्रामीण नीति विकसित करने के लिए एक मंच के रूप में काम कर सकते हैं।

मुनोज, स्टीनर और फार्मर (2014) ने ग्रामीण स्कॉटलैंड में किए गए शोध पर अध्ययन कर प्रस्तुत शोधपत्र में ग्रामीण सामाजिक उद्यम उत्पन्न करने की प्रक्रिया में समर्थित सामुदायिक कार्रवाई की भूमिका का वर्णन करता है। यह शोधपत्र इस बात पर ध्यान केंद्रित करता है कि सेवा प्रदाताओं के रूप में सामाजिक उद्यमों को बनाने के लिए एक सुविधाजनक प्रक्रिया के माध्यम से ग्रामीण समुदायों का समर्थन किया जा सकता है या नहीं? और यदि ऐसा है तो कैसे? सामाजिक उद्यम विकसित करने के लिए एक क्रिया-अनुसंधान प्रक्रिया में शामिल चार सामुदायिक मामलों के अध्ययन के विश्लेषण से परिणामों का उपयोग करते हुए शोधपत्र ग्रामीण समुदाय आधारित सेवा प्रदाताओं के रूप में सामाजिक उद्यमों को बनाने के लिए आवश्यक सामुदायिक क्षमताओं और उद्यमशीलता कौशल की पहचान करता है। इन प्रक्रियाओं, कौशलों और क्षमताओं को एक विकास मॉडल के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। लेखकगण के अनुसार यह मॉडल गुणात्मक सामग्री के विषयगत विश्लेषण का आरेखीय प्रतिनिधित्व है और इसका उपयोग चार वैयक्तिक अध्ययन समुदायों में विकास प्रक्रिया कैसे हुई? इसमें समानता और अंतर को उजागर करने के लिए किया जाता है। शोधपत्र का अंतिम खंड सेवा प्रावधान और उनके निर्माण से जुड़ी प्रक्रियाओं के लिए ग्रामीण सामुदायिक सामाजिक उद्यमों के बारे में समझ पैदा करने के लिए अध्ययन के योगदान की पहचान करते हुए निष्कर्ष और निहितार्थ प्रस्तुत करता है।

निष्कर्ष-

उक्त साहित्यों के अध्ययन से शोधार्थी इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि उद्यमशीलता आर्थिक विकास को प्रोत्साहित करके, रोजगार के अवसरों को बढ़ाकर और स्थानीय समुदायों को सशक्त बनाकर ग्रामीण विकास को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह शोधपत्र उद्यमशीलता और ग्रामीण विकास के बीच संबंधों के प्रमुख कारकों, चुनौतियों और ग्रामीण क्षेत्रों में उद्यमशीलता की गतिविधियों के प्रभावों पर प्रकाश डालता है। सफल वैयक्तिक अध्ययन और मौजूदा साहित्य की जांच करके, यह पत्र उन रणनीतियों और नीतियों में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है जो प्रभावी रूप से उद्यमशीलता को बढ़ावा देकर सतत ग्रामीण विकास को बढ़ावा दे सकते हैं। ग्रामीण उद्यमशीलता के लिए एक सक्षम वातावरण बनाने में महत्वपूर्ण कारकों के रूप में उद्यमशीलता पारिस्थितिकी तंत्र, वित्त तक पहुंच, क्षमता निर्माण की पहल और नवाचार के महत्व को रेखांकित करते हैं। यह शोधपत्र नीति निर्माताओं, हितधारकों और उद्यमियों के लिए ग्रामीण विकास और ग्रामीण समुदायों के समग्र कल्याण को बढ़ाने के लिए एक उपकरण के रूप में उद्यमशीलता का लाभ उठाने के लिए सुझावों के साथ समाप्त होता है।

सन्दर्भ-

- Baxter, J.S. (2023). Modes of Spread in Social Innovation : A Social Topology Case in Rural Portugal. Elsevier, Journal for Rural Studies 99, 243-251. https://doi.org/10.1016/j.jrurstud.2021.04.016
- Jungsberg, L., Randall, L., Copus, A., Herslund, L.B., Nilsson, K., Perjo, L. & Berlina, A. (2020). Key Actors in Community-Driven Social Innovation in Rural Areas in The Nordic Countries. Elsevier, Journal for Rural Studies 79, 276-285. https://doi.org/10.1016/j.jrurstud.2020.08.004
- Korsgaard, S., Muller, S., & Tanvig, H. W. (2015). Rural Entrepreneurship or Entrepreneurship in the Rural : Between Place and Space. International Journal of Entrepreneurial Behavior & Research, 21(1), 5-26. https://doi.org/10.1108/IJEBR-11-2013-0205
- Munoz, S.A., Steiner, A. & Farmer, J. (2014). Processes of Community-led Social Enterprise Development : Learning from the Rural Context. Community Development Journal, Vol. 50, No. 3, 478-493. https://doi.org/10.1093/cdj/bsu055
- Neumeier, S. (2017). Social Innovation in Rural Development : Identifying The Key Factors of Success. The Geographical Journal, Vol. 183, No. 1, 34–46. https://doi.org/10.1111/geoj.12180
- Olmedo, L., Twuijver, M.V. & O'Shaughnessy, M. (2023). Rurality as Context for Innovative Responses to Social Challenges – The Role of Rural Social Enterprises. Elsevier, Journal for Rural Studies 99, 272-283. https://doi.org/10.1016/j.jrurstud.2021.04.020
- Steiner, A. & Teasdale, S. (2019). Unlocking the Potential of Rural Social Enterprise. Elsevier, Journal for Rural Studies 70, 144-154. https://doi.org/10.1016/j.jrurstud.2017.12.021
- Steiner, A., Calo, F. & Shucksmith, M. (2023). Rurality and Social Innovation Processes and Outcomes : A Realist Evaluation of Rural Social Enterprise Activities. Elsevier, Journal for Rural Studies 99, 284-292. https://doi.org/10.1016/j.jrurstud.2021.04.006